B.A. Part III (Hons)
Paper- VII - Sub - भारतीय दर्शन

शैव मत

पूर्वमध्य युग में भगवान शिव की उपासना का बड़ा प्रचलन था। इस युग में प्राप्त लेखों और निर्मित शिव मन्दिरों से इस तथ्य का पता चलता है। पूर्व मध्य युग में शैव सम्प्रदाय अनेक शाखाओं में विभक्त हो गए। इन शाखाओं में पाशुपत, कापालिक, कालमुख और लिंगायत मुख्य हैं। पूर्वमध्ययुग में शैव मत के व्यापक प्रचार का एक मुख्य कारण राजाश्रय था।

शिव की उपासना वेदों के समय से प्रचलित है। यजुर्वेद का शतरुद्रीय अध्याय प्रसिद्ध है। तैत्तिरीय आरण्यक में इस समस्त विश्व को रुद्र बताया गया है। श्वेताश्वर आदि कुछ उपनिषदों में, महाभारत में तथा कुछ पुराणों में शिव या रुद्र की महिमा वर्णित है। शैव-सम्प्रदायों के मूल ग्रन्थों को शैवागम कहते हैं। माधवाचार्य ने चार शैव-मतों का वर्णन किया है। नकुलीश-पाशुपत, शैव, प्रत्यभिज्ञा और रसेश्वर। यामुनाचार्य ने कापालिक और कालामुख नामक दो और शैवमतों का उल्लेख किया है। दक्षिण में शैवमत वीरशैव या लिङ्गायत सम्प्रदाय और शैव सम्प्रदाय में विभक्त है।

शिव परम तत्व है। उनकी संज्ञा 'पति' है क्योंकि वे सबके स्वामी हैं। उनमें आठ गुण विद्यमान हैं आत्म-सत्ता, स्वाभाविक पवित्रता, स्वानुभूति, अनन्त ज्ञान, परम स्वातन्त्र्य, निमित्त-कारण, उसका दण्ड और चक्र सहकारी कारण तथा मिट्टी उपादान का कारण है। उसी प्रकार शिव जगत के निमित्त कारण, उनकी शक्ति सहकारी और माया उपादान कारण है। शिव और शक्ति का सम्बन्ध तादात्म्य

सम्बन्ध बताया गया है। शिव सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ हैं। वे पञ्चकृत्यकारी हैं। उनके पाँच कृत्य हैं- विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और संहार तथा जीवों पर निग्रह और अनुग्रह। निग्रह शक्ति से जीवों का ज्ञान और आनन्द आवृत या तिरोहित रहता है तथा अनुग्रह शक्ति से आवरणभङ्ग होकर मुक्ति मिलती है।

जीवात्माओं को "पशु" कहा गया है क्योंकि वे पशुवत् अविद्या-रज्जु द्वारा संसार में बंधे हैं। जीव नित्य है तथा इच्छा-ज्ञान-क्रियायुक्त होने से वास्तव में ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता है।

जीवों और पशुओं के बन्धन "पाश" कहलाते हैं। वे त्रिविध हैं - अविद्या, कर्म और माया। अविद्या अनादि है तथा सब जीवों में एक है इसी को आणव मल भी कहते हैं। यह मल नित्य है, किन्तु इसकी बन्धनकारी प्रतीति हटाई जा सकती है। इसके कारण जीव स्वयं को सीमित, सान्त और अणु रूप समझकर शरीरेन्द्रियान्तःकरणादि में आबद्ध तथा ज्ञान एवं शक्ति में सीमित मान लेते हैं।

मोक्षावस्था में जीव या शिव से तादात्म्य हो जाता है। तादात्म्य का अर्थ ऐक्य नहीं अपितु अपृथक्त्व है। मोक्ष में भी जीव का व्यक्तिभाव बना रहता है। क्योंकि जीव की सत्ता नित्य है किन्तु शिव के आनन्द में तन्मय हो जाने के कारण जीव को अपने व्यक्तिभाव का भान नहीं होता। जीव का स्वभाव है अपने विषय के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेना।

Scanned with CamScanner

बद्धावस्था में जीव शरीरादि जड़ पदार्थों के साथ तादात्म्य करलेता है। मोक्षावस्था में जीव शिव के साथ तादात्म्य स्थापित करके उसके साथ सह-व्याप्त हो जाता है। मोक्ष में जीव को अपने-अपने शुद्ध स्वरूप का, अपने अनन्त ज्ञान और आनन्द का, शिव के साथ अपने तादात्म्य सम्बन्ध का पूर्ण अनुभव होता है किन्तु जीव को पञ्चकृत्यों का अधिकार प्राप्त नहीं होता।

मोक्ष का अर्थ शिव-सायुज्य है। जीवन्मुक्ति भी मान्य है। सत्कर्म, उपासना और ज्ञान, भक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। जिससे जीव शिव के अनुग्रह को ग्रहण कर सके। शिव का जीवों के प्रति प्रेम अनुग्रह है; जीवों का शिव के प्रति प्रेम 'भक्ति' है। जीव का अन्य जीवों से प्रेम करना शिव से प्रेम करना है। सिद्धेश्वर का कथन है कि जो मानवजाति से प्रेम नहीं करते, वे ईश्वर से प्रेम नहीं करते।

इस मत में शिव ही परम तत्व है, जो परमात्मा, परमेश्वर, परमशिव, अनुत्तर आदि नामों से अभिहित है। शिव प्रकाश रूप है और शक्ति विमर्शरूप है। विमर्श आत्म-चेतना का स्फुरण है, जिसप्रकार शिव और शक्ति में कोई अन्तर नहीं होता, उसीप्रकार प्रकाश और विमर्श में अन्तर नहीं होता। जगत और जीव शिवस्वरूप ही है। सृष्टि शिव की लीला का विलास है। शिव अपनी चित्-शक्ति से, अपने स्वातन्त्र्य और आनन्द के कारण नाना प्रकार से स्फुरित हो रहे हैं। स्वयं को नाना रूपों में अभिव्यक्त करना शिव का स्वातन्त्र्य है। समस्त जड़ चेतन पदार्थ दर्पण-प्रतिबिम्बवत् शिव-

Scanned with CamScanner

के प्रमाण है। वे न परिणाम हैं और न विवर्त। शिव-विश्वात्मक और विश्वोत्तीर्ण दोनों है। विश्वात्मकरूप में परम-शिव समस्त विश्व में अन्तर्यामी और व्यापक है किन्तु वे विश्व में सीमित नहीं है। अपनी स्वातन्त्र्य शक्ति के कारण वे विश्व से परे या विश्वोत्तीर्ण भी हैं।

शिव का विकास वैदिक-देवता-रुद्र और तमिल देवता मुरुगन से हुआ है। शिव की उपासना में नाग-देवता जैसे- लिंग, साँड आदि की पूजा करने वाले अनेक मत हैं। शैवपूजा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप लिंग-पूजा का सूत्रपात लगभग ईसवी सन् के प्रारम्भ से हुआ।

हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त सामग्रियों में कुछ ऐसी मूर्तियाँ मिली हैं जिन्हें शिव का प्रारम्भिक रूप माना जा सकता है। मोहन जोदड़ो से प्राप्त ~~योगी की~~ योगी की मूर्ति तथा त्रिमुख की मूर्ति से स्पष्ट हो जाता है कि योगीराज शिव तथा पशुपति के द्योतक हैं।

पूर्वी भारत का राजा अशोक-प्रसिद्ध शैवधर्म को माननेवाला था। राजाओं के अतिरिक्त गुप्तकाल के विद्वानों तथा कवियों ने भी शैवमत का प्रचार था। उस युग के सर्वश्रेष्ठ कवि कालिदास शैव थे। कुछ समय के उपरान्त भारवी ने प्रसिद्ध काव्य किरातार्जुनीयम में दिखाया था कि अर्जुन ने पाशुपति अस्त्र प्राप्त करने के लिए शिव की घोर तपस्या की थी

यदि हम दक्षिण भारत की ओर ध्यान दें तो पता चलेगा कि शैवधर्म वहाँ बड़ा